"रक्तविस्त्रावण" प्रकरण

* **रक्तविस्त्रावण** ⇒ रक्तगत दोषज (व्याधि ग्रन्थि रोग, वातरक्त, कण्डू, पिड़िका, कुष्ठ) में शरीर से उचित मात्रा में अशुद्ध रक्त को स्त्रवित कराने की प्रक्रिया को रक्तविस्त्रावण कहते हैं।

* **रक्तविस्त्रावण का महत्व** ⇒

* शिराव्यधश्चिकित्साऽर्धं शल्यतन्त्रे प्रकीर्तितः। (सु॰ शा॰ 8/23)

* एकतश्चक्रियाः सर्वा रक्तमोक्षणमेकतः। (वाग्भट्ट)

* त्वग्दोषा ग्रन्थयः शोफा रोगाः शोणितजाश्च ये।
  रक्तमोक्षणशीलानां न भवन्ति कदाचन॥ (सु॰ सू॰ 14/34)

  अर्थात् रक्तमोक्षण करने से त्वक् विकार, ग्रंथियाँ, शोफ एवं रक्तजन्य रोग नहीं होते हैं।

* शोफ चिकित्सा में वर्णित सप्त उपक्रम में रक्तविस्त्रावण को द्वितीय स्थान प्राप्त है।

* **रक्तविस्त्रावण के उपकरण** ⇒ श्रृंग, अलाबू, जलौका, सूची कुशपत्र, त्रिकूर्चक इत्यादि

* **त्रिकूर्चक का महत्व** ⇒

"विशेषेण बालवृद्धभीरूसुकुमारनारीणाँ राज्ञांराजपुत्राणां च त्रिकूर्चकेन विस्त्रावयेत्।" (सु॰ सू॰ 8/5)

* रक्तविस्त्रावण से पूर्व '<u>यवागूपान</u>' करने का विधान है।

Scanned with CamScanner

(#) रक्तविस्त्रावण के भेद ⇒

(1) अशस्त्र विस्त्रावण ⇒ (3) प्रकार से।

(A) शृंग द्वारा = वातजदुष्टि में ⇒ * शृंग से तात्पर्य गौशृंग से है (कृष्ण, मधुर, श्लक्ष्ण)
* (10) अंगुल तक रक्तमोक्षण संभव
* 18 अंगुल लम्बा व लगाने वाला भाग 3 अंगुल व्यास का
* सर्षपवत् छिद्र होता है।

(B) अलाबू द्वारा = कफजदुष्टि में ⇒ * यह कटु, रूक्ष, तीक्ष्ण होती है
* (12) अंगुल तक रक्तमोक्षण
* 12 अंगुल लंबा व 18 अंगुल चौड़ा होता है।

(C) जलौका द्वारा = पित्तजदुष्टि में ⇒ * एक (1) हस्त परिमाण तक रक्त मोक्षण संभव।

(2) शस्त्र विस्त्रावण ⇒ 2 प्रकार से।

(A) प्रच्छान ⇒ रक्त के पिण्डीभूत या अल्प दोष युक्त होने पर। यथा- क्षुद्र कुष्ठ में।

(B) सिरावेध ⇒ अवगाढ़तम या सर्वशरीरगत दोष होने पर

(#) त्वचागत दोष की गंभीरता में रक्तमोक्षणार्थ क्रम ⇒

सिरावेध ⇒ शृंग (विषाण) ⇒ अलाबू ⇒ जलौका ⇒ प्रच्छान

Scanned with CamScanner

रक्त की अवस्थानुसार रक्तमोक्षण ⇒

"अवगाढ़े जलौकाः स्यात्प्रच्छन्नं पिण्डिते हितम् ।
शिराऽङ्गव्यापके रक्ते शृङ्गालाबू त्वचि स्थिते ॥ (सु॰ शा॰ 8/26)

* गम्भीर धातुओं में दोष ⇒ जलौका
* पिण्डीभूत दोष होने पर ⇒ प्रच्छान
* सर्वशरीर व्यापी दोष होने पर ⇒ सिरावेधन
* त्वक् गत दोष होने पर ⇒ शृंग व अलाबू

रक्तविस्रावण साधित व्याधियाँ ⇒ शोथ, श्लीपद, कुष्ठ, विदारिका, कण्ठशालुक, विष एवं सन्निपातज को छोड़कर अन्य सभी विद्रधियाँ।

रक्त विस्रावण निषेध ⇒ (1) मद, मूर्च्छा एवं कास से पीड़ित रोगी में।
(2) मल-मूत्र एवं वायु का अवरोध होने पर।
(3) अत्युष्ण काल एवं अत्यधिक स्वेदन के पश्चात्।
(4) सर्वांग शोफ, अत्यधिक क्षीण रोगी में, पाण्डु, उदररोग, अर्श, शोष रोगी एवं गर्भिणी में

रक्त विस्रावण के उपद्रव ⇒ उपरोक्त निषिद्ध रोगियों में रक्तविस्रावण करने पर रक्त स्राव अधिक होने से अन्धत्व एवं आक्षेपक आदि उपद्रव होते हैं।

Scanned with CamScanner